ISSN: 2349-4654, UGC: 1340-48783
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 6, सेमिनार विशेषांक, जनवरी 2018

हारमोनियम की स्वरयात्रा : एक अवलोकन

डॉ. राजेश गोपालराव केलकर

अध्यक्ष-कंठ्य संगीत विभाग,फेकल्टी आफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बडौदा

सार-संक्षेप

हारमोनियम, पम्प ऑर्गन, पेटी, बाजा पेटी, सम्वादिनी, ऑर्गन जैसे विविध नाम से प्रसिद्ध मूलत: पश्चिमी सुषिर वाद्य, वर्तमान समय में भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय है। रीड्स और स्वर पट्टियों के सहारे बजनेवाला यह वाद्य लोकसंगीत, सिने संगीत, शास्त्रीय संगीत, सुगम जैसी विभिन्न विधाओं का अभिन्न अंग है। हार्मोनियम के समान एक वाद्य कि सर्वप्रथम कल्पना एवं रचना गेब्रियल जोसफग्रेनी (1756-1837) ने की। एक मतानुसार फ़िसहार्मोनिका नामक वाद्य का निर्माण 1818 में वियना में एंटन हिक्ल ने किया था। सन 1810 में आलेक्झंद्र देबेन ने गेब्रियल ग्रेनी के वाद्य में परिवर्तन कर के 9 अगस्त, 1840 में उसे फ्रांस के पेरिस में पेटंट करवाया। कहते है कि इसाई मिशनरियों के जरिये यह वाद्य भारत में आया। महाराष्ट्र के नाट्य संगीत और भारतीय शास्त्रीय संगीत में इसकि सर्वाधिक स्वीकृति हुई। समय के चलते इस वाद्य पर के. बी. देवल तथा ई. क्लेमेंट्स ने श्रुति हारमोनियम बनाया। पं. गोविंदराव टेंबे, भैया गणपतराव, पं. गोविंद पटवर्धन, पं. मनोहर चिमोटे, पं. तुलसीदास बोरकर, इत्यादि अनेकों कलाकारों ने इस वाद्य को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचाया। देवल एवं क्लेमेंट्स कि तर्ज़ पर डॉ. विद्याधर ओक ने अत्याधुनिक श्रुति हारमोनियम बनाया, जो कि आज बेहद लोकप्रिय हो चुका है। पचास के दशक में एक समय ऐसा भी आया कि भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय ने इस वाद्य को श्रुति, गमक, मींड़ इत्यादि के मामले में सक्षम न होने के कारण भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए प्रतिकूल मानकर ऑल इंडिया रेडियो पर प्रतिबंध लगा दिया। इस वाद्य ने गत डेढ़सों से अधिक वर्षों में काफी उतार चढ़ाव देखे है। परंतु इसकी प्रसिद्धि अधिकाधिक बढ़ती ही गयी है।

मुख्य शब्द : हारमोनियम, रीड आर्गन, सम्वादिनी, हारमोनियम संगति, हारमोनियम एकल वादन

शोध-पत्र

भारतीय अभिजात संगीत में गायन के साथ वीणा या उसके प्रकार संगति के रूप में बजाने कि प्राचीन परंपरा रही। उसके बाद सारंगी और दक्षिण में विशेषत: वायोलिन ने स्थान लिया। 19 वीं शताब्दी के अंत में विदेश से आया हार्मोनियम आज संगति के रूप में सब से अधिक लोकप्रिय वाद्य का दर्जा प्राप्त कर चुका है। हार्मोनियम, पम्प ऑर्गन, पेटी, बाजा पेटी, सम्वादिनी, ऑर्गन जैसे विविध नाम से प्रसिद्ध मूल पश्चिमी सुषिर वाद्य, वर्तमान समय में भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय है। रीड्स और स्वर पट्टियों के सहारे बजनेवाला यह वाद्य लोकसंगीत, सिने संगीत, शास्त्रीय संगीत, सुगम जैसी विभिन्न विधाओं का अभिन्न अंग है।

18 नवंबर 1882 में दादासाहेब मोडक नामक कलाकार ने सर्वप्रथम मराठी रंगमंच पे 'संगीत सौभद्र' नाटक में पाँव से बजने वाली पायपेटी (ऑर्गन) बजाई।[1] इसकी आवाज़ ने संगीत रसिकों को इतना मोहित किया कि आज इस वाद्य में अनेकानेक परिवर्तन, प्रयोग होते होते एक 'श्रुति हारमोनियम' नाम से एक अत्याधुनिक रूप भी धारण कर लिया है। शास्त्रीय संगीत से ले कर, उपशास्त्रीय, सुगम, ग़ज़ल-भजन, फिल्म संगीत इत्यादि गीतप्रकारों के लिए संगति हेतु हि नहीं परंतु एकल वाद्य के रूप में तथा कल्पक सांगीतिकारों के लिए नई रचनाओं कि निर्मिति के लिए प्रेरणा स्वरूप अनिवार्य वाद्य के रूप में लोकप्रिय हो चुका है।

समावेशन : मूलत: योरोपीय वाद्य हार्मोनियम के समान एक वाद्य कि सर्वप्रथम कल्पना एवं रचना गेब्रियल जोसफग्रेनी (1756-1837) ने की। गेब्रियल के रीड वाद्य में अधिक संभावना थी एवं आवाज को छोटा बड़ा करने कि क्षमता थी। एक मतानुसार फ़िसहार्मोनिका नामक वाद्य का निर्माण 1818 में वियेना में एंटन हिक्ल ने किया था।[2] सन 1810 में आलेक्झंद्र फ्रांसिस देबें ने, गेब्रियल ग्रेनी के वाद्य में परिवर्तन कर के 9 अगस्त, 1840 में उसे फ्रांस के पेरिस में पेटंट करवाया, जो कि हार्मोनियम कहलाया। 'रीड ऑर्गन' यह उसका मूल रूप था। उसके पहले 'पाइप ऑर्गन' एवं 'फ्री रीड्स' के वाद्यों का प्रचार था। रीड ऑर्गन से पहले मुँह से बजनेवाला 'हार्मोनिका' यह फ्री रिड्स युक्त वाद्य प्रचार में था। 'रीड ऑर्गन' के आविष्कार के बाद 'फ्री रीड्स' के वाद्य पिछड़ गए। हार्मोनियम आकार में छोटा, वजन में हल्का होने के अलावा उस पर किसी भी प्रकार के हवामान या वातावरण का नकारात्मक प्रभाव पड़ने कि संभावना कम होने के कारण (पियानो में शीघ्र असर होता है) शीघ्र हि योरोप, उत्तर-दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका इत्यादि देश-प्रांत में प्रसिद्ध हुआ। यहाँ तक कि पाश्चात्य सांगीतिकारों ने हार्मोनियम के अनुकूल कई रचनाओं का भी आविष्कार किया। भारत में इस काल के दौरान ब्रिटिश सत्ता अपना अस्तित्व दृढ़ कर चुकी थी। इंग्लैण्ड और योरोप के देशों में विभिन्न आविष्कारों का प्रसार शुरू हो चुका था और उसका प्रभाव भारत में भी

था। अपने आविष्कारों को ग़ुलाम देश में प्रचारित करने के प्रयास होना अत्यंत स्वाभाविक था। यह 'रीड ऑर्गन', 'पाय पेटी' नाम धारण कर भारत में आयी।

हार्मोनियम का भारत आगमन :

एक मतानुसार इसाई मिशनरियों के जरिये हार्मोनियम यह वाद्य भारत में आया। टी. एस. रामचन्द्र एंड कंपनी (वाद्यों के आयातकार) ने सर्वप्रथम हार्मोनियम वाद्य को आयात किया। अन्य एक मतानुसार सांगीतिकार द्वारकानाथ घोष कि 'द्वारकिन एंड संस' ने 1875 में कलकत्ते में हाथ से बजने वाला हार्मोनियम आयात किया। घोष ने इसकी आंतरिक रचना में आवश्यक परिवर्तन कर इसे वजन में हल्का फिर भी मजबूत, टिकाऊ, सस्ता और सुलभ बनाया। मराठी एवं फारसी रंगमंच, महाराष्ट्र की कीर्तन परंपरा तथा इसाई चर्च के माध्यम से इसका प्रचार हुआ। महाराष्ट्र के नाट्य संगीत और भारतीय शास्त्रीय संगीत में इस कि सर्वाधिक स्वीकृति हुई। शीघ्र ही संगति वाद्य और बाद में एकल वाद्य के रूप में भारत भर में बेहद प्रसिद्ध हुआ।

हार्मोनियम की विशेषताओं का उल्लेख करना उचित होगा।

हार्मोनियम और संगति:

गायन में संगति के लिए संगति वाद्य से कुछ बाते बेहद अपेक्षित है:—

1. गायन में अखंड संगति मिलनी चाहिये।
2. गायन में संगति के समय गायक अनपेक्षित स्वरसंगति ले रहा हो, तो उस के साथ अंदाज़ ले कर बजाने कि क्षमता वादक में हो और वाद्य के द्वारा गायन में किसी प्रकार का अवरोध पैदा न हो।
3. प्रस्तुति दौरान गायक रुके तो वह अवकाश भरने कि संभावना और क्षमता उस वाद्य में होनी आवश्यक है।
4. वाद्य और वादक में ऐसे गुण हो कि गायक को अपनी प्रस्तुति दरमियान प्रेरणा मिले, कोई अवरोध पैदा नहीं हो और उत्साह बढ़े। कई बार अच्छा संगतिकार अपनी कुछ स्वरावलियाँ बजाकर गायक को प्रेरित करता है। गायक इस से प्रेरणा लेकर समां बांध देता है। दूसरी ओर गायक भी ऐसा अवसर संगतिकार को देता है।

हार्मोनियम में यह सभी संभावनाएँ भरी पड़ी है। बेहद आसान वाद्य होने के कारण केवल शास्त्रीय संगीत में ही नहीं परंतु, गीत, ग़ज़ल, भजन, सिने संगीत, लोक संगीत में भी एक अनिवार्य वाद्य बन चुका है।

हार्मोनियम और एकल वादन:

ग्वालियर के राज घराने में जन्मे भैया गणपतराव शिंदे ठुमरी-दादरा के गायक एवं हार्मोनियम के सब से अधिक प्रसिद्ध वादक रहे। उन्होंने अधिकतर छोटी बन्दिशों को ही बजाया। परंतु कहा जाता था कि अंग्रेजों ने बाजा बनाया पर बजाया तो भैया गणपतराव ने। राग संगीत एवं ठुमरी को सर्वप्रथम हार्मोनियम पर प्रस्तुत करने का श्रेय आप को जाता है। उनके पश्चात् विख्यात संगीत निर्देशक पं. गोविंदराव टेंबे का नाम हार्मोनियम वादक के रूप में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। आपने एकल वादन (सोलो) के रूप में हार्मोनियम को सर्वप्रथम रसिकों के सम्मुख प्रस्तुत किया। स्वयं अत्यंत प्रतिभाशाली संगतिकार थे और गायनाचार्य पं. भास्करबुवा बखले के संगतिकार थे। कई मराठी संगीत नाटकों एवं फिल्मों के सांगीतिकार के रूप में उन्होंने नाम कमाया। आगरा-मथुरा घराने के ग़ुलाम रसूल खाँ, रामभाऊ विजापुरे, मधुकर पेडणेकर (पी. मधुकर), विट्ठलराव कोरगावकर, भीष्मदेव वेदी, गिरिजशंकर चक्रवर्ती, ठाकुरदास, गोविंदराव पटवर्धन, ज्ञानप्रकाश घोष, मनोहर चिमोटे, तुलसीदास बोरकर, अप्पा जलगावकर, पुरुषोत्तम वालावलकर, अरविंद थत्ते, प्रमोद मराठे, भूरे खाँ, महमूद धौलपुरी जैसे कई नाम है जिन्होंने आगे चलकर एकल वादन और संगति में नाम कमाया।

हार्मोनियम वाद्य की मर्यादा एवं विवाद

पाश्चात्य संगीत में प्रत्येक स्वर का एक निश्चित नुकीला स्थान है। परंतु भारतीय संगीत में स्वर का एक विस्तार है जिसमें राग के आधार पर स्वर स्थान बदलता है। भारतीय संगीत में मेलोड़ी तो पाश्चात्य संगीत में हार्मनी (एक समय में अनेक स्वरों संवादयुक्त सर्जन) होती है, जिसके नाम से ही हार्मोनियम यह नामकरण हुआ है। भारतीय संगीत श्रुति प्रधान है। भावाभिव्यक्ति के लिए बहेलावे, सूत, गमक, मींड़, लहक इत्यादि कई अलंकारों का प्रयोग होता है। दो स्वरों के बीच स्थित श्रुत्यांतर, रागों में विशेषत: कोमल स्वरों के दर्जे इतने सूक्ष्म है कि उनको हार्मोनियम के द्वारा निकालना असंभव है। क्योंकि हार्मोनियम का स्केल टेम्पर्ड स्केल, स्वाभाविक नहीं है। सभी स्वर खड़े बजते है इसी लिए भारतीय संगीत की बारीकियाँ निकालना कठिन है। अर्थात् किसी भी की बोर्ड युक्त वाद्यों में भारतीय 'स्वर' कि संकल्पना संभव नहीं है। इन्हीं कमियों के कारण कुछ परंपरावादी कलाकारों एवं शास्त्रकारों ने हार्मोनियम वाद्य का विरोध किया था। अत: आल इंडिया रेडियो ने करीब 40 वर्ष प्रतिबंध लगाया था।[3] अनेक शीर्षस्थ कलाकार, आचार्य पं. श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर जैसे विद्वान और गुरुदेव रबिन्द्रनाथ टेगौर ने भी इस वाद्य का काफी विरोध किया था। हालाँकि टैगोर जी ने अपनी रचनाओं कि निर्मिति के समय इस वाद्य का भरपूर प्रयोग भी किया था। एक दूसरी आफ़्ताब ए मौसिकी उस्ताद फ़ैयाज़ खान साहब ने तो अपनी अनेक रिकार्डिंग एवं महफिलों में उस्ताद ग़ुलाम रसूल खां से हार्मोनियम बजवाया। आज भी आकाशवाणी पर हार्मोनियम के सोलो वादन पर प्रतिबंध है।

हार्मोनियम एवं ट्यूनिंग:

पाश्चात्य का टेम्पर्ड स्केल और भारतीय संगीत के नेचुरल स्केल में क्रमिक स्वरांतरों का भेद है। या यूँ कहे कि स्वरों के आयोजन कि दृष्टि से दोनों स्केल में अंतर है। टेम्पर्ड स्केल में हरेक स्वर का अंतर एक समान होने के कारण कहीं से भी आधार स्वर मान कर बजाएँ तो क्रमिक स्वर समान अंतर से ही बजते है। भारतीय नेचुरल स्केल में गांधार, धैवत और कुछ हद तक मध्यम स्वर टेम्पर्ड स्केल कि तुलना में उतरे हुए है तो

पंचम स्वर चढ़ा हुआ है। इसी कारण एकल वादन में गांधार ट्यूनिंग वाला हार्मोनियम बजाया जाना चाहिए। परंतु संगति करते समय अलग-अलग कलाकारों कि स्केल भिन्न-भिन्न होने के कारण टेम्पर्ड स्केल सुविधा जनक रहता है। हालाँकि संवेदनशील सुज्ञ श्रोता इसकी कमी को तुरंत पहचान लेते हैं।[4]

हार्मोनियम की प्रसिद्धि के मुख्य कारण एवं प्रमुख विशेषताएँ:

विशेषताएँ काफी है परंतु लेख के संदर्भ में उन्हें सीमित रखना उचित होगा। वह कुछ इस प्रकार है:

1. हार्मोनियम में कुंजिकाएँ निश्चित स्थानबद्ध होने के कारण उसे सीखना और बजाना अन्य वाद्यों कि तुलना में सहज एवं सरल है।
2. हार्मोनियम सुषिर वाद्य होते हुए भी बाँसुरी, क्लेरोनेट, शहनाई जैसे वाद्यों कि तुलना में गायन में संगति के लिए अधिक उपयुक्त है क्योंकि हार्मोनियम के अलावा उपरोक्त वाद्य फूँक से बजते है और बजाने में श्वास का सातत्य संभव नहीं है जो कि हार्मोनियम में सहज संभव है। गायन में हार्मोनियम का सातत्यपूर्ण अखंड सुर मिलता है।
3. बाँसुरी, शहनाई आदि वाद्यों कि तुलना में हार्मोनियम कि ध्वनि मनुष्य कि आवाज के करीब है।
4. हार्मोनियम में नर, खर्ज, मादी इस प्रकार के आवाज वाली रीड्स एवं उनका परस्पर संयोजन कर के गायक एवं गायिका कि आवाज के अनुकूल आवाज पैदा हो सकती है।
5. हार्मोनियम में स्केल होने के कारण कॉर्ड सुंदरता से बजाए जा सकते है, यह नयी रचनाएँ बनाने, समूह गीत, सुगम संगीत, ग़ज़ल, कव्वाली संगति के लिए अनुकूल होता है।
6. अन्य वाद्यों (विशेषत: तन्तु) की तरह इसे बारम्बार ट्यूनिंग करने के आवश्यकता नहीं होती है।
7. इस वाद्य कि आवाज में आवश्यकतानुसार परिवर्तन की अनेक संभावनाएँ है।

हार्मोनियम के संदर्भ में विभिन्न कलाकारों ने किए हुए प्रयोगों कि संक्षिप्त सूची बताना आवश्यक है। हालाँकि इस में सभी कलाकारों को स्थान देना असंभव है। कुछ कलाकारों ने निम्न प्रयोग किए।

1. 1916 कि बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड कि प्रेरणा से पं. विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संगीत परिषद में कृष्णाजी बल्लाल देवल और ब्रिटिश उच्चाधिकारी ई. क्लेमेंट्स ने स्वयं बनाई हुई श्रुति हार्मोनियम पर सप्रयोग व्याख्यान दिया। जिसमें स्वयं उस्ताद अब्दुल करीम खान, डागुर बानी के उस्ताद ज़ाकिरुद्दीन खान एवं आफताब ए मौसिकी उस्ताद फ़ैयाज़ खाँ भी शरीक थे।[5] इस हार्मोनियम के द्वारा राग में उपयुक्त विविध स्वरस्थान के निकट जाने का प्रयास था।
2. गोविंदराव टेंबे जैसे उच्चशिक्षित बहुमुखी प्रतिभाशाली संगतिकार ने (गायक, वादक, निर्देशक, लेखक, अभिनेता, निर्माता) हार्मोनियम को संगीत के इतिहास में सर्वप्रथम एकलवादन के रूप में प्रस्तुत कर सम्मान दिया। अपने वादन में कुछ ऐसी युक्ति का प्रयोग किया कि मानों सार्थ शब्द ही व्यक्त हो रहे हो। आप ने अपने संगीत नाटकों एवं फिल्म संगीत निर्देशन में इस वाद्य का खूब उपयोग किया। हार्मोनियम को संगीत क्षेत्र के मुख्य प्रवाह में लाने का श्रेय आप ही को जाता है।[6]
3. पं. ओमकारनाथ ठाकुर ने भी श्रुति हार्मोनियम बनाने का प्रयास किया, जिसका एक नमूना मुझे बड़ौदा में ही एक सज्जन के घर देखने को मिला। हालाँकि इसका प्रचार अधिक नहीं हुआ।
4. भीष्मदेव वेदी ने सर्वप्रथम हार्प जैसा (छोटा स्वर मण्डल) वाद्य हार्मोनियम के ऊपर लगाया जिससे बेहतर स्वर झंकार—गूंज पैदा हो सके। श्रुति शास्त्र के आधार पर गांधार ट्यूनिंग करना, की बोर्ड में अतिरिक्त अति मंद्र सप्तक का प्रयोजन एवं वादन खटका प्रयोग, विविध जातिओं के पलटे, तन्तु वाद्यों कि तरह झाला पैदा करने के नूतन प्रयोग हार्मोनियम पर किए।
5. भीष्मदेव वेदी के शिष्य मनोहर चिमोटे जी ने हार्मोनियम का भारतीय नामकरण 'संवादिनी' रूप में किया और उसका प्रचार किया। मूल हार्मोनियम में काफी बदलाव कर के 'संवादिनी' का नया रूप दिया। अनुनादपूर्ण मधुर ध्वनि के लिए विशिष्ट रीड्स का उपयोग किया, पारंपरिक हार्मोनियम में एक से अधिक धमनियाँ लगवाई। अत: हार्मोनियम के ध्वनि कि क्षमता में वृद्धि हुई, ध्वनि में वैविध्य, काकु प्रयोग संभव हो पाया। आप ने इस में स्वर मण्डल भी जोड़ा। हार्मोनियम को एकल वादन का दर्जा देने का आप ने भरसक प्रयास किया। शहीद परवेज़-सितार, रोणु मुझुमदार-बाँसुरी जैसे श्रेष्ठ कलाकारों के साथ जुगलबंदी और सप्रयोग व्याख्यान द्वारा संवादिनी का प्रचार किया।
6. अरविंद थत्ते ने टेम्पर्ड स्केल को नकारते हुए गांधार ट्यूनिग वाले हार्मोनियम तैयार करवाए। गायक के आधार स्वर अनुसार बारह स्वरों के बारह गांधार ट्यूनिंग वाले हार्मोनियम बजाना शुरू किया।
7. बापुराव अग्निहोत्री ने कुंजिकाओं के ऊपर की प्लेट को विशेष स्थिति में रखकर, कुंजिकाओं को विशेष स्तर पर खुली रख कर आंदोलित कोमल स्वरों का आभास निर्माण करने का प्रयास किया।
8. सुधांशु कुलकर्णी जी ने रिड्स के ऊपर जहाँ से हवा निकलती है वह लकड़ी कि पट्टिकाओं कि जगह प्लास्टिक कि पट्टिकाएँ बनवाकर मौसम का बुरा असर होने से रोकने का सफल प्रयास किया।
9. कृष्णाजी बल्लाल देवल कि तर्ज़ पर करीब 90 साल के पश्चात् डॉ. विद्याधर ओक ने श्रुति हार्मोनियम बनाया तथा उस का पेटन्ट

बनवाकर एक सफल प्रयोग किया। इसमें चल स्वर षडज एवं पंचम के अलावा प्रत्येक स्वर के चार रूप (शुद्ध एवं कोमल के प्रत्येक की दो-दो कुंजिकाएँ) कुंजिकाओं के रूप में रखकर हार्मोनियम का एक नया क्रांतिकारी स्वरूप निर्माण किया। प्रत्येक राग के विशेषत: कोमल स्वरों के दर्जे अलग होने के कारण यह हार्मोनियम बेहद उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसे कई श्रेष्ठ कलाकारों ने सराहा है। आप का यह आविष्कार सचमुच क्रांतिकारी है।

10. जिनका प्रमुख व्यवसाय हार्मोनियम वादन नहीं था फिर भी हार्मोनियम वादन में प्रवीण थे या है उन कलाकारों में सुरेशबाबू माने(गायक एवं उ. अब्दुल करीम खाँ के सुपुत्र), पुरषोत्तम लक्ष्मण देशपांडे (लेखक, निर्माता, अभिनेता, गायक) ज्ञानप्रकाश घोष (गायक, तबला वादक एवं संगीत शास्त्रज्ञ), अजय चक्रवर्ती (गायक, गुरु) इत्यादि प्रमुख है।

हार्मोनियम के प्रकार :

हार्मोनियम एक ऐसा वाद्य है कि इस वाद्य पर जीतने आकार, स्वरूप, ध्वनि इत्यादि के स्तर पर प्रयोग हुए उतने प्रयोग शायद ही किसी अन्य वाद्य पर हुए हो। रीड ऑर्गन के बाद, भारत में 'पाँव पेटी' आयी। उसमें नोटेशन स्टैंड लगाया गया। रिड्स के विविध प्रकारों का इस्तेमाल किया गया। इसमें जर्मन एवं पेरिस के रिड्स बेहद पाप्युलर हुए। आजकल गुजरात में भावनगर के पास जैन तीर्थ क्षेत्र पालिताणा कि रीड्स भी काफी पाप्युलर है। पाँव पेटी का छोटा स्वरूप एक धमनी का बॉक्स हार्मोनियम प्रचार में आया। सातत्यपूर्ण एक आधार स्वर देने के लिए स्वरपेटी का आविष्कार हुआ। उसी आकार कि बिलकुल छोटी 'कंपेक्टिनो' हारमोनियम, कपलर हार्मोनियम, फोल्डिंग और नॉर्मल स्केल चेंजर हार्मोनियम, आवश्यकतानुसार कम ज्यादा सप्तक के हार्मोनियम, गांधार ट्युनिंग के तथा अत्याधुनिक श्रुति हार्मोनियम तक का प्रवास हमेशा इस वाद्य को प्रसिद्धि के शिखर तक ले जाता रहा है।

दक्षिण भारत एवं हारमोनियम:

दक्षिण भारत में विशेषत: कर्णाटीक संगीत में, वायोलिन कि तुलना में हार्मोनियम का प्रयोग बहुत कम हुआ है। फिर भी कुन्दस्वामी मुदलियार, पॉण्डिचेरी टी. एस. रामा अइय्यर कुशलता से स्वरों के सूक्ष्म भेदों कि कमी को छुपाने में सफल रहते थे। आप गमकों के अधिक प्रयोग वाली रचनाओं से दूर रहे और ऐसे ही राग बजाए जिस में शुद्ध स्वर अधिक हो। दक्षिण के सभी प्रमुख फिल्मी सांगीतिकार महान हार्मोनियम वादक थे। क्यों कि इस वाद्य से रचना निर्मिति के लिए असाधारण आधार मिलता है। कर्नाटक संगीत के महाराजपुरम विश्वनाथ अइय्यर और अलाथुर शिवसुब्रमण्य अइय्यर बेहद उच्च कोटि के हार्मोनियम वादक है।

उपसंहार:

सहज, सरल वाद्य होना, पहले ही से सुर में मिलाया हुआ, किसी भी गीत प्रकार में चाहे पुरुष, स्त्री कि किसी भी प्रकार कि आवाज को संगति के लिए अनुकूल ऐसा हार्मोनियम वाद्य आज करीब 14 दशक से भारत में आने के बाद उत्तरोत्तर प्रगति एवं प्रसिद्धि के शिखर छू रहा है। इस वाद्य का संगीत जगत में जितना विरोध हुआ, शायद ही किसी और वाद्य का हुआ हो। फिर भी यह वाद्य शास्त्रीय, उपशास्त्रीय तथा सुगम संगीत के सभी गीतप्रकार एवं रचनाकारों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत रहा है। भारतीय संगीत कि शास्त्रीय संगीत विधा से ले कर, उपशास्त्रीय संगीत, ग़ज़ल, लोक गीत, सुगम संगीत, फिल्मी संगीत, भक्ति संगीत जैसे किसी भी विधा में इसका स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण हो चुका है। यहाँ तक कि बड़े-बड़े सांगीतिकार अपनी नयी रचनाओं का प्रयोग करते समय इसी वाद्य का अचूक उपयोग करते है। इस वाद्य में राग संगीत कि श्रुति प्रधानता के कारण काफी कमियाँ होने के बावजूद इस वादी की प्रसिद्धि अचंभित कर देनेवाली है। इस वाद्य ने गत डेढ़सों से अधिक वर्षों में काफी उतार चढ़ाव देखे है। परंतु इसकी प्रसिद्धि अधिकाधिक बढ़ती ही गयी है। यह वाद्य सचमुच भारतीय संगीत का अनिवार्य हिस्सा बन चुका है।

सन्दर्भ

1. भालोदकर, जयंत, संवादिनी (हारमोनियम), नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स, 2006, पृ. 45-51
2. बोरकर, तुलसीदास, संवादिनी साधना, गोवा: पं. तुलसीदास बोरकर प्रतिष्ठान, 2004
3. ओक, आदित्य, कोल्हटकर, चिन्मय, काटोटी, रवीन्द्र, हारमोनियम पुणे: ग्राफ्ट 5 पब्लिकेशन्स, 2017, पृ. 14, 18, 19-24, 30, 33, 48
4. बेडेकर, अनंत, हारमोनियम, नागपुर: नागपुर विश्वविद्यालय, पृ. 9,12
5. कपिलेश्वरीबुवा, बालकृष्णबुवा, श्रुतिदर्शन पुणे: कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, 1963
6. संगोराम, श्रीरंग आचार्य श्रीकृष्ण रातंजनकर 'सुजान' मुंबई रातनजनकर, आचार्य एस. एन. - विश्वस्त 1993